STD. VIII Hindi Lit.(परनिंदा)

प्रश्न उत्तर:--

प्रश्न 1.परनिंदा ऐसा खेल है जिसमें किसी उपकरण की आवश्यकता नहीं और न ही समय की कोई पाबंदी है, स्पष्ट करें।

उत्तर:--निंदा की प्रवृत्ति हर व्यक्ति के जीवन में इस प्रकार प्रवेश कर गई है कि इससे कोई भी अछूता नहीं है। महंॅगाई के इस ज़माने में सबसे सस्ता व सरल मनोरंजन का कोई साधन है, तो वह है परनिंदा। इसमें किसी उपकरण या पैसे की ज़रुरत नहीं, बस एक श्रोता मिल जाए और हम बिना खाए-पिए दिन भर निंदा रस का आनन्द उठा सकते हैं।

प्रश्न 2 . इस पाठ में लेखक ने कई जगह व्यंग्यपूर्ण वाक्य लिखा है, किन्हीं चार का उल्लेख करें।

उत्तर:--यह पाठ व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है तथा कई व्यंग्यपूर्ण वाक्य हैं।

जैसे :- परनिंदा मीठी रोटी है, जिधर से तोड़ो उधर से मीठी।

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि कबीरदास भी किसी निन्दक के सताये हुए थे।

खाने-पीने को कुछ न मिले, तो कोई नुकसान नहीं। किन्तु यदि दूसरों की निंदा करने का सुअवसर प्राप्त न हो तो हमारा जीवन वीरान हो जाएगा।

आजकल लोग निंदा के क्षेत्र में नए क्षितिज छुए जा रहे हैं तथा लोग अपने पिता को भी नहीं छोड़ते, गुरुजी तो किसी गिनती में ही नहीं।

प्रश्न 3. कवि सम्मेलन से लौटते समय लेखक के पड़ोसी ने कवियों के प्रति क्या विचार व्यक्त किए?

उत्तर :--कवि सम्मेलन से लौटते समय लेखक के पड़ोसी के कवियों के बारे में विचार थें कि कोई कवि स्वयं को दिखाने की ज़्यादा कोशिश कर रहा था ,तो किसी की आवाज़ गधे के रैंकने जैसी थी। कोई रोनी सूरत का था तो कोई किसी दूसरे कवि की नकल कर रहा था। इस प्रकार उन्होंने जमकर सबकी निंदा की।

प्रश्न 4. 'परनिंदा भवन' किसे कहा गया है वहाँ क्या होता था ?

उत्तर :--लेखक के पड़ोसी के घर की बैठक परनिंदा भवन थी, जहाँ सभी प्रकार के लोग जमते, दूसरों की निंदा करते और निंदा रस में डूब जाते।

प्रश्न 5 .लेखक के पड़ोसी कब परेशानी में पड़ गए? कैसे उन्हें परेशानी से मुक्ति मिली?

उत्तर:--लेखक के पड़ोसी एक दिन सार्वजनिक रूप से अपनी सास की निंदा कर रहे थे कि वह उनसे कितना काम कराती हैं, उनका कैसा चिड़चिड़ा स्वभाव है तथा कितनी लोभिन हैं। तभी किसी ने उनकी श्रीमती जी से ये सारी बातें कह दी। अब तो लेखक के मित्र परेशानी में पड़ गए। उनके घर में झगड़ा हुआ तथा खाना भी नहीं बना।

लेखक अपने मित्र की परेशानी को ख़त्म करने के लिए उनके घर गए और साहस करके मित्र की पत्नी से बातचीत प्रारंभ की। लेखक के बहुत समझाने- बुझाने पर उनका गुस्सा उतरा और मित्र ने अपनी श्रीमती जी के सामने प्रतिज्ञा की कि वे किसी की निंदा नहीं करेंगे।

प्रश्न 6. आशय स्पष्ट करें :---

क) परनिंदा मीठी रोटी है जिधर से तोड़ो उधर से मीठी।

--- किसी की निंदा करना सभी को अच्छा लगता है। यह सभी रसों में सर्वश्रेष्ठ है। इसमें हम किसी भी विषय को ले सकते हैं और कहीं भी किसी की निंदा कर सकते हैं। दूसरों की निंदा करना लोगों के मन को मिठास से भर देता है। इसमें सभी रसलीन रहते हैं। सुनने वाला भी प्रसन्न रहता है और सुनाने वाला भी संतुष्ट।

ख) सच पूछिए तो यदि दूसरे की निंदा करने का सुअवसर प्राप्त न हो तो हमारा जीवन वीरान हो जाए।

---- लेखक को निंदा रस सर्वश्रेष्ठ लगता है। उनका मानना है कि निंदा की प्रवृत्ति व्यक्ति के दैनिक जीवन में इस तरह प्रवेश कर गई है कि इससे कोई भी अछूता नहीं है। कुछ व्यक्तियों ने तो इसे अपने जीवन के अन्य कार्यकलापों की भाँति आवश्यक बना लिया है और ऐसे लोगों को दूसरों की निंदा करने का सुअवसर न मिले तो उनका जीवन वीरान हो जाएगा।